त्रिलोक सिंह ठकुरेला

ठहरी हुयी कहानी

राख जम चुकी
अंगारों पर
मौसम की मनमानी है

तेज चल रही
सर्द हवा में
बन्द खिड़कियां ऊब रही हैं
असमंजस में
देह दोहरी
आशंका से डूब रही हैं

पैबन्दों में
फंसी रजाई अब भी
वही पुरानी है

पसर गया है
मौन हर तरफ
बैठे हैं सब खोये–खोये
सबके भीतर
दर्द छुपा है
कौन कहां तक किससे रोये

आधीरात
धूप की आशा
बातें ही बचकानी हैं

सूरज आने में
देरी है
रात काट पाना है मुश्किल
हांफ चुके हैं
दम पंजों के
बहुत दूर है आगे मंजिल

उम्र थक चुकी
कांधे बोझिल
ठहरी हुयी कहानी है।

भ्रम उजालों का

छद्मवेशी आवरण में
हर तरफ
बहुरूपिये हैं

हर दिशा ओझल हुई सी
हर तरफ छाया कुहासा
बस्तियों में मातमी धुन,
हर गली में है धुंआ सा,
घुट रहा है दम सभी का
सब गले तक
विष पिये हैं

भय दिखाती लाल आंखें
हर कदम पर आज आड़े
अस्मिता से खेलते हैं
आततातयी, दिन दहाड़े
देखती लाचार आंखें
किन्तु सबके
मुंह सिये हैं

जी रहे हैं या मरे हैं
बहुत मुश्किल है बताना,
मौन रहने में भला है
अनुभवों से यही जाना,
है अंधेरे की शरण में
भ्रम उजालों का
लिये हैं।

सम्पर्क–
बंगला नं0 एल–99,
रेलवे चिकित्सालय के सामने
आबू रोड (राजस्थान)–307026
मो.–09460714267